IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M05/2/ABHIN/SP1/HIN/TZ0/XX/T

22052307

HINDI B – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Monday 16 May 2005 (morning)
Lundi 16 mai 2005 (matin)
Lunes 16 de mayo de 2005 (mañana)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश क

पाठांश क

दूसरों की क़िस्मत पढ़ो, अपनी चमकाओ

दूसरों का भाग्य बाँचकर अपनी क़िस्मत चमकाने का शायद एक नायाब नुस्ख़ा नई पीढी के हाथ लग गया है। बाक़ायदा कोर्स करके ऐसे लोग पेशेवर ज्योतिषी बनने के लिए आगे आ रहे हैं जिन्हें पंडितजी या शास्त्रीजी कहना ज़रा कठिन महसूस होता है।

पीढ़ी पर पीढ़ी, गुरु-शिष्य परंपरा से चलनेवाले इस पारंपरिक अध्ययन का रूप तेज़ी से बदल रहा है, कंप्यूटरों ने पोथी-पत्रे की जगह ले ली है और चुटियावाले पंडितजी की जगह जींस पहनकर अँगरेज़ी बोलनेवाले नौजवान आ गए हैं ।

भारत में लगभग पच्चीस विश्वविद्यालय विधिवित पढ़ाई के बाद ज्योतिष की डिग्री देते हैं जहाँ इन दिनों दाख़िला लेनेवालों की भारी भीड़ दिखने लगी है।

दिल्ली के भारतीय विद्या भवन में ज्योतिष शास्त्र के प्रध्यापक एस.गणेश का मानना है कि "जब लोग खाना पकाने और घर की साज-सज्जा जैसे विषयों को पढ़कर उसे व्यवसाय के रूप में अपना सकते हैं तो ज्योतिष को क्यों नहीं?"

कुछ वर्ष पहले तक शौक के कारण ज्योतिष पढ़नेवालों की बजाय अब इसे व्यवसायिक दृष्टिकोण से पढ़ा जा रहा है, महिलाएँ भी इस विषय को अपनाने में पीछे नहीं हैं। ज्योतिष पर लगातार बढ़ रहे विश्वाश के बारे में प्रसिद्ध ज्योतिषी की पुत्री इला शुक्ला का कहना है कि "जीवन अब उतना सरल नहीं रहा जितना पहले था। तनाव और प्रतियोगिता के इस ज़माने में ज्योतिष जीवन को कुछ हद तक आसान बनाने में मददगार है इसलिए इसकी लोकप्रीयता बढ़ रही है।

ज्योतिषशास्त्र की एक विद्यार्थी शीला पारखी का कहना है कि "यह एक सम्मानजनक व्यवसाय है जिसमें काफ़ी पैसा है, साथ ही इसे घर बैठे भी किया जा सकता है, महिलाओं के लिए यह विषय आदर्श अवसर उपलब्ध करवाता है।"

कुछ साल पहले तक भारतीय विद्या भवन में ज्योतिष पढ़नेवालों की संख्या ५० से १०० तक रहती थी लेकिन इस वर्ष बढ़कर ८०० तक जा पहुँची है। इस विषय को पढ़नेवालों की तादात बढ़ने का कारण बताते हुए आर. त्रिवेदी कहते हैं - "पहले एक जाति विशेष के लोग ही इसका अध्ययन किया करते थे लेकिन अब ज्योतिष के दरवाज़े सभी के लिए खुल गए है।"

लेकिन ऐसे लोग भी हैं जिनका मानना है कि सबके लिए दरवाज़ा खुलने का मतलब यह नहीं है कि सभी अच्छे ज्योतिषी बन जाएँगे। दिल्ली के प्रसिद्ध हनुमान मंदिर के सामने हाथ देखकर भविष्य बतानेवाले अजय झा का कहना है कि इस पेशे में नब्बे प्रतिशत अनुभव और साधना ज़रूरी है। भगवान से सीधे तार जुड़े होना का दावा करते हुए कहते हैं कि "अगर ज्योतिष का ज्ञान पढ़कर ही आ जाए तो सभी ज्योतिषी न बन जाएँ। ज्योतिष में आत्मा की आवाज़ का बड़ा रोल है और वह साधना से ही संभव है।"

वैसे तो अब भविष्यवाणी के लिए कम्प्यूटर का भी सहारा लिया जाने लगा है लेकिन इस विषय के जानकारों का मानना है कि कहीं भी थोड़ी सी चूक ग़लत भविष्यफल दे सकती है।

ज्योतिषियों की भविष्यवाणियाँ सही हों या ग़लत, लेकिन एक भविष्यवाणी बेखटके की जा सकती है कि आनेवाले समय में ज्योतिष और ज्योतिषियों का चेहरा पूरी तरह बदल जाएगा।

पाठांश ख

महिलाओं ने कई क्षेत्रों में असंभव को संभव बना दिया है। एक जमाना था जब जमीन को खेती के लिए पट्टे पर पुरुष ही लिया करते थे। लेकिन अब जमाने ने करवट ले ली है और इस क्षेत्र में भी महिलाएं कूद पड़ी हैं। ऐसा ही कुछ कर दिखाया है हरियाणा के साढ़राणा गांव की महिलाओं ने। एक रपट इन महिलाओं के सामूहिक प्रयास की, धरती की सौंध से नया जीवन लेने की, कदम से कदम मिला कर बढ़ने की, गरमियों में पसीने की बूंदों और सरदियों में ठिठुरते हाथों के साथ काम करने की।

इतिहास रचा है साढ़राणा गांव की महिलाओं ने। इन महिलाओं ने गांव में पहली बार 2 किले जमीन हासिल की। यह जमीन वही थी, जो पहले पुरुषों के पास थी और ये महिलाएं इस जमीन पर मजदूरों के रूप में काम किया करती थीं। दिहाड़ी कमाने से जो थोड़े बहुत पैसे मिलते थे, उससे गुजारा करती थीं। लेकिन यही मजदूर महिलाएं एक नए रूप में उभर कर सामने आयीं। उन्होंने इस जमीन को पट्टे पर लिया और उस पर काम किया। उन्होंने जमीन को सुधारा और उस पर खेती करने का बीड़ा उठाया। अगर उन्हें पट्टे पर ली गयी जमीन से आमदनी हुई, तो पुरुषों से इस जमीन पर मजदूरी करवाने की भी योजना है।

ऐसा भी नहीं है कि इस काम को ले कर उन्हें किसी विरोध का सामना ना करना पड़ा हो। इसकी शुरुआत तो उनके घर से ही हुई। सबसे पहले उनके पतियों ने उन्हें घर की चारदीवारी से बाहर निकलने से रोका। कई महिलाओं ने अपना नाम ना छापे जाने की शर्त पर बताया कि हमारे पति ने यह कह कर टोका कि तू घनी कमानेवाली है, घनी मीटिंग्स में जानेवाली है। पर वे अपने निर्णय पर अडिग रहीं। उन्हें महसूस हो रहा था कि अगर वे इस काम में सफल हो गयीं, तो कम से कम अपने बच्चों को आराम से पढ़ा-लिखा तो पाएंगी। घर से बाहर निकलने के बाद भी उनकी मुश्किलें कोई खास आसान नहीं हो पायीं। उन्होंने अपनी हिम्मत और मेहनत से इस जमीन पर बीज बोने, क्यारी बनाने, गुड़ाई करने से ले कर सब काम खुद किए। यहां तक कि इस जमीन पर खुद ही हल भी चलाया। वहीं गेंदे के फूलों की खेती के लिए उन्हें पानी के गंभीर संकट का सामना करना पड़ा। इस गांव की महिला सरपंच वेदवती ने बताया,''इस खेत पर ट्यूबवेल ना होने के कारण सिंचाई में बहुत कठिनाई आयी। कभी इधर-उधर से पानी 600 रुपए में मोल लिया। कभी सामने बन रहे शौचालय से पानी ढो कर लाए, तो कभी कुछ और इंतजाम किया।'' इस ग्रुप की एक अन्य महिला ने बताया,''हमने अपनी तरफ से कुछ पैसे जोड़ कर पानी के पाइप भी डलवाए।'' इसके बावजूद सिंचाई सही ढंग से नहीं हो पायी। इस जमीन पर काम करनेवाली महिलाओं की राय थी कि अगर इस जमीन पर ट्यूबवेल लग जाए, तो इस जमीन को लीज पर ले कर खेती करना फायदे का सौदा है।

पाठांश ग

टूटा इक तार सितार का

सम्मानों-पुरस्कारों को ठुकराने वाले विद्रोही सितारवादक ने रसिकों को ही खुदा मान रखा था

चले गए उस्ताद विलायत खान. इसी 13 मार्च को. वही विलायत खान जिनका नाम सितार का पर्याय बन गया था. पूर्व बंगाल (अब बांग्लादेश) के गौरीपुर में 1928 में उनका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जिसकी छह पीढ़ियां संगीत में ही पली-बढ़ी थीं. अब्बा इनायत खान के अलावा उस्ताद बंदे हुसैन खान और वाहिद खान ने उनको संगीत की तालीम दी. तकनीक और वाद्य पर अपने अधिकार के बूते पर उन्होंने मेलोडी को निरंतर विकसित किया.

महान कलाकार वही होता है जो मौजूदा शैलियों और रूपों में अपना योगदान करते हुए परंपरा को आगे बढ़ाने वाले के रूप में अपनी पहचान बनाए. इस नजरिए से विलायत खान का अपना विशेष महत्व रहा है. उन्होंने सितारवादन में कुछेक बदलावों को अंजाम देते हुए कई नए प्रयोग भी किए. जिन नवाचारों को उन्होंने शामिल किया, उनमें गायकी अंग उल्लेखनीय है. यह उनकी अपनी शैली के साथ जुड़ गया.

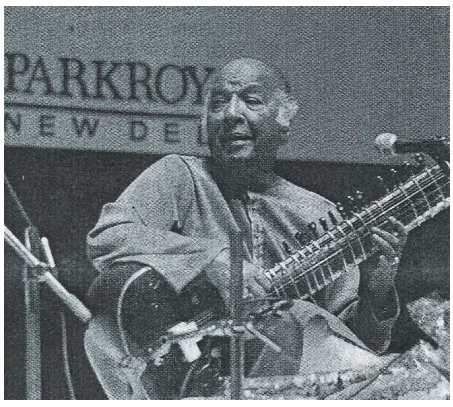

विलायत खान
1928-2004

बहरहाल, संगीत की अपनी परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए वे बेटे शुजात हुसैन खान व हिदायत के साथ बेटी यमन और ज़िला खान को छोड़ गए हैं. संगीत में अपनी असाधारण रचनात्मकता के चलते महान बने विलायत खान साहब भारतीय शास्त्रीय संगीत के बाक और मोज़ार्ट थे. ऐसी महान विभूतियां सदी में एक बार ही जन्म लेती हैं.

—एस. सहाय रंजीत

यह तो स्पष्ट है कि वे प्रयोगों में विश्वास करते थे लेकिन परंपरा के सांचे-खांचे से हटकर नहीं. वे शुद्धता और शास्त्रीयता के पक्के हामी थे. पूरब और पश्चिम का घालमेल करने वाले समझौतावादी संगीतकारों के उलट उन्होंने महज वाहवाही के लिए इन तरक़ीबों से ताजिंदगी परहेज ही किया. वे साफ कहते थे कि "पश्चिम के पीछे भागने से हमारी अपनी पहचान खो जाने का खतरा है. एफिल टॉवर की तारीफ बिलाशक कीजिए, पर क़ुतुब मीनार को भूलिए मत; पीसा की झुकी हुई मीनार पर हैरत जताइए पर अपने मुल्क के बेमिसाल मंदिरों को भुला मत दीजिए. दूसरी तहज़ीबों-संस्कृतियों की शान में कसीदे पढ़ने से पहले असल भारत की तस्वीर तो देख लीजिए."

उन्होंने इनायती और वसंतकली जैसे कुछ रागों की भी रचना की पर बाद में उन्हें इसका अफसोस रहा. उन्हें लगा कि पहले से ही इतने राग मौजूद हैं जिन्हें साधने के लिए एक जिंदगी नाकाफी है. अनेक टीवी चैनलों के पदार्पण के बावजूद संगीत के प्रति बरती जा रही बेरुखी उनको अखरी, अक्सर वे कहा करते, "अगर कारोबार के और सियासत के अलग-अलग टीवी चैनल हो सकते हैं तो हिंदुस्तानी संगीत का क्यों नहीं हो सकता?" उन्हें यह बात सालती थी कि हिंदुस्तान की अपनी कोई सांस्कृतिक नीति नहीं है. "सांस्कृतिक नीति के प्रति हमारा रवैया सांस्कृतिक नहीं है."

खान साहब बड़े विद्रोही मिजाज के थे. संगीत नाटक अकादमी सम्मान के अलावा पद्मश्री और पद्म विभूषण जैसे सम्मान भी उन्होंने इसलिए ठुकरा दिए क्योंकि उन्हें इन सबकी निर्णय प्रक्रिया निहायत भेदभावपूर्ण लगती थी. सम्मान-पुरस्कारों की चयन प्रक्रिया को लेकर उनके विरोध के अलावा यह उनके सिद्धांतवादी होने और गजब के आत्मविश्वास को ही दर्शाता था. आज कितने संगीतकार हैं जो व्यवस्था के खिलाफ इस तरह खड़े हो सकेंगे?

पाठांश घ

शाही सफ़र – शाही बस से !!
दिल्ली – आगरा – जयपुर – उदयपुर

यदि आप भारत के ऐतिहासिक शहरों की सैर करना चाहते हैं तो यह आपके लिए एक सुनहरा मौक़ा है।

दिल्ली पर्यटन विभाग ने एक नयी बस सेवा आरम्भ की है जो कनाट प्लेस, दिल्ली से प्रारम्भ होती है। ये वातानुकूलित बस पहले आपको दिल्ली के अनेक ऐतिहासिक स्थानों की सैर कराती है , जैसे लाल क़िला , कुतुब मीनार , जामा मसज़िद , चांदनी चौक इत्यादि। यह सारा सफ़र एक दिन में पूरा किया जाता है। रात में आप एक चार स्टार वाले होटल में रहेंगे। दूसरे दिन बस आगरा के लिए रवाना होगी।

आप दो दिन आगरा में रहेंगे जहां पर आपको ताज महल , सिकंदरा , फ़तहपुर सीकरी तथा और भी कई ऐतिहासिक स्थानों की सैर कराई जाएगी। आप आगरे के शानदार ताज पैलेस होटल में रहेंगे।

आगरे के बाद आपकी शाही सवारी जयपुर के लिए रवाना होगी। वहां पर आप तीन दिन रहेंगे और हवा महल , अम्बेर पैलेस जैसे बहुत से ऐतिहासिक दिलचस्पी वाले स्थानों को देखेंगे। साथ ही जयपुर के मशहूर होटल अम्बेर पैलेस की सेवा का मज़ा भी उठाएंगे।

आपके सफ़र का आख़िरी पड़ाव उदयपुर होगा जहां पर आपको लेक पैलेस होटल में रखा जाएगा। यह होटल एक झील के बीच में बना है और अपनी तरह का एक बेमिसाल होटल है। उदसपुर में भी आप अनेक ऐतिहासिक स्थान देखेंगे और राजस्थान के अनोखे अतिथि सत्कार का उपभोग करेंगे।

दसवें दिन बस आपको वापस दिल्ली ले आएगी। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपको यह यात्रा सदैव याद रहेगी। दिल्ली पर्यटन आपकी सुख सुविधा का पूरा प्रबंध करेगा और यह चाहेगा कि इस यात्रा में आप स्वयं ही एक महाराज होने का अनुभव करें!

दस दिन की इस पर्यटन यात्रा का सारा मूल्य केवल पांच हज़ार रुपये प्रति व्यक्ति होगा। इस में आपके सफ़र का खर्च और आपके रहने व खाने पीने का प्रबंध सम्मिलित होगा। साथ ही एक गाइड सदैव आपके साथ रहेगा। यदि आप दस लोगों के समूह में हैं तो हम आपको १०% कमीशन भी देंगे। अगर आप इस सुनहरे मौक़े का फ़ायदा उठाना चाहते हैं तो शीघ्र ही हम से टेलीफ़ोन पर सम्पर्क स्थापित करें। हमारा नम्बर है –

नयी दिल्ली ४६९ ५७८८